ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–५४
दिनांक– शुक्रवार, १४ जुलाई, २०२३

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 32.3 एवं 25.2 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 93 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 90 प्रतिशत, हवा की औसत गति 3.3 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 0.7 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 0.3 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 30.3 एवं दोपहर में 32.7 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में 20.6 मि0मी0 वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(15–19 जुलाई, 2023)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 15–19 जुलाई, 2023 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- अगले 19 जुलाई तक मौसम पूर्वानुमान के अनुसार अगले 24 घंटों में विशेष रूप से तराई के जिलों में कहीं कहीं मध्यम वर्षा हो सकती है। पश्चिम चम्पारण जिलों में मध्यम से भारी वर्षा होने की सम्भावना है तथा अन्य सभी जिलों के अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है। 24 घंटो के बाद उत्तर बिहार के जिलों में वर्षा की सक्रियता में कमी आएगी।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 32–35 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 24–27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 70 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 12 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पूरवा हवा चलने की सम्भावना है।

• समसामयिक सुझाव

- विगत पूर्वानुमान की अवधी में उत्तर बिहार में अनेक स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा हुई है। मौसम पूर्वानुमान की अवधि में बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में वर्षा जल का संग्रह करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें तथा धान की रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का व्यवहार सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का व्यवहार करें।
- धान की रोपाई प्राथमिकता के आधार पर करें। मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्रम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का व्यवहार करें।
- उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलोग्रम नेत्रजन, 45 किलोग्रम स्फुर एवं 20 किलोग्रम पोटाश तथा 20 किलोग्रम सल्फर का व्यवहार करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
- आम का साटा तथा लीची, अमरूद एवं नींबू की गूटी तैयार करें। पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें।
- खेत की जुताई में गोबर की खाद/कम्पोस्ट का अधिक से अधिक प्रयोग करें। यह भूमि की जलधारण क्षमता एवं पोशक तत्व की मात्रा बढ़ाती है। मिट्टी जाँच के बाद संतुलित मात्रा में उर्वरक का प्रयोग करें, विशेष तौर पर पोटाश की मात्रा बढ़ायें। ताकि फसल की सुखें से लड़ने की क्षमता बढ़ सके।
- प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
- लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी, शाही, अर्ली वेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, र्स्वणरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10X10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
- केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दूधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
- तिल, उरद, बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा, आदि फसलों की बुआई करें।
- पशुओं में खुरपका–मुँहपका रोग के लक्षण दिखाई दे रहे हों तो इसके बचाव हेतु पशुओं के मुँह को फिटकरी या पोटाश के घोल तथा खुर को फिनाईल से धोवें। अगर टीकाकरण नहीं हुआ हो तो पशु चिकित्सक की सलाह से टीकाकरण अवश्य करा लें। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे।

आज का अधिकतम तापमानः 31.6 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.1 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 24.8 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.0 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)